डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा

बीए हिंदी स्नातक द्वितीय खंड, द्वितीय पत्र – काव्य और नाटक

ध्रुवस्वामिनी एक समस्या नाटक

जयशंकर प्रसाद के नाटक ध्रुवस्वामिनी को विद्वानों ने समस्या नाटक कहा है, इस नाटक में ऐतिहासिकता के साथ आधुनिकता का संतुलित समावेश किया गया है। ऐतिहासिक परिवेश में कथा का विषय प्रासंगिक एवं समकालीन है। इस नाटक के मूल में समस्या को रखा गया है साथ ही उसका समाधान भी प्रस्तुत किया गया है। ऐसा पति जो क्लीव है, नारी के आत्मसम्मान की रक्षा नहीं कर सकता है, जो भोग जर्जर और नपुंसक है, उससे एक भारतीय पत्नी मुक्त हो सकती है या नहीं? वह पुनर्विवाह कर सकती है या नहीं? जयशंकर प्रसाद ने अपने नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' में न सिर्फ इस समस्या को उठाया है बल्कि उसका समाधान भी प्रस्तुत किया है। इस समस्या का समाधान करने के लिए उन्होंने सामाजिकता और धार्मिक मान्यताओं का आदर करते हुए शास्त्र – सम्मत मार्ग प्रस्तुत किया है। इसके लिए उन्होंने निम्नलिखित श्लोक का आश्रय लिया है –

"नीचत्वं परदेशं वा प्रस्थितो राजकिल्विषी।

प्राणाभिहंता पतितस्त्याज्य: क्लीवोपि वा पतिः।

जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रमुख चार स्तम्भ कवियों में से एक थे। उनका काव्यत्व उनके नाटकों को और अधिक जीवंतता प्रदान करता है। उनके नाटकों में एक ओर स्वच्छन्दतावादी नाट्य – परंपरा की रोमांटिक दृष्टि है तो दूसरी ओर समृद्ध इतिहास और सांस्कृतिक गरिमा का सजीव चित्रण है। जयशंकर प्रसाद क्लासिक नाट्य परंपरा के बौद्धिक और तार्किक पक्ष को जितना महत्व दिया है उतना ही रोमांटिक नाटकों की भावुकता को भी प्रधानता दी है। जयशंकर प्रसाद राष्ट्रीय – सांस्कृतिक चेतना सम्पन्न साहित्यकार हैं। उनकी राष्ट्रीय – सांस्कृतिक चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति 'चंद्रगुप्त' नाटक में हुई है। भारतीय संस्कृति के प्रति जयशंकर प्रसाद की गहरी आस्था है। 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक पर भी प्रसाद के अन्य नाटकों की भाँति भारतीय संस्कृति का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। मिहिरदेव के संवाद के रूप में जयशंकर प्रसाद का यह कथन द्रष्टव्य है –

"स्त्री का सम्मान नष्ट करके तुम जो भयानक अपराध करोगे, उसका फल क्या अच्छा होगा? राजा, स्त्रियों का स्नेह – विश्वास भंग कर देना, कोमल तंतु को तोड़ने से भी सहज है, परंतु सावधान होकर उसका परिणाम भी सोच लो।"

ध्रुवस्वामिनी एक स्वाभिमानी स्त्री के रूप में चित्रित की गई है। प्रस्तुत नाटक में वर्तमान और भविष्य के लिए अनेक जीवंत संदेश हैं। उनकी सांस्कृतिक निष्ठा नाटक के प्रत्येक अंश में परिलक्षित हो रही है। ध्रुवस्वामिनी के

मुख से कहलवाए गये संवाद भारतीय नारी के आत्मसम्मान की रक्षा का संदेश बनकर उपस्थित हुए हैं। रामगुप्त को ललकारती हुई ध्रुवस्वामिनी कहती है –

“मुझमें रक्त की तरल लालिमा है। मेरा हृदय उष्ण है और उसमें आत्मसम्मान की ज्योति है। उसकी रक्षा मैं ही करूँगी।”

चंद्रगुप्त के संवाद के माध्यम से भी प्रसाद ने भारतीय संस्कृति की रक्षा का संदेश दिया है। -

“जिस मर्यादा के लिए, जिस महत्व को स्थिर रखने के लिए, मैंने राजदंड ग्रहण न करके, अपना मिला हुआ अधिकार छोड़ दिया, उसका यह अपमान! मेरे जीवित रहते आर्य समुद्रगुप्त के स्वर्गीय गर्व को पददलित न होना पड़ेगा।”

भारतीय संस्कृति स्त्री के आत्मसम्मान का समर्थन करती है। भारतीय संस्कृति मर्यादा और मानवीय मूल्यों का संरक्षण करती है। जयशंकर प्रसाद के लगभग सभी नाटकों में ऐतिहासिकता, राष्ट्रीयता और भारतीयता का चित्रण है। ध्रुवस्वामिनी भी इससे अछूता नहीं है। उनकी सांस्कृतिक चेतना व्यापक और उदात्त स्वरूप लेकर उनके नाटकों में अभिव्यक्त होती है। उनकी सांस्कृतिक चेतना राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रीय गौरव को और भी सुदृढ करती है। ऐतिहासिक परिवेश में भारतीय संस्कृति के गुणों का जीवंत चित्रण करते हुए जयशंकर प्रसाद ने ‘ध्रुवस्वामिनी’ जैसे समस्या नाटक की रचना की है जिसमें समस्या को उठाया भी गया है और उसका समाधान भी प्रस्तुत किया गया है। भारतीय नारी के आत्मसम्मान की रक्षा ‘ध्रुवस्वामिनी’ का प्रमुख संदेश है।